जवाब दर सवाल



जनगीतों का संकलन

प्रथम संस्करण	:	1988
द्वितीय संस्करण	:	1993
संकलन एवं प्रकाशन	:	एकलव्य कोठी बाज़ार होशंगाबाद 461 001
चित्रांकन	:	कैरन हेडॉक
मुद्रण	:	आदर्श ऑफसेट प्रिंटर्स एम.पी.नगर भोपाल

क्र.	गीत	पेज
1.	तू ज़िन्दा है तो . . .	3
2.	वो सुबह कभी तो आयेगी	5
3.	तुम्हारे हाथ . . .	7
4.	इसलिए राह संघर्ष की हम चुने	8
5.	बुनियाद हिलनी चाहिए . . .	10
6.	जागा रे, जागा रे	11
7.	मशालें लेकर चलना	12
8.	ले मशालें चल पड़े हैं	13
9.	गर हो सके तो . . .	14
10.	डोला	15
11.	ए लाल फरेरे तेरी कसम	17
12.	दिलों में घाव ले के भी चले चलो	19
13.	रुके न जो झुके न जो . . .	20
14.	दरबारे वतन में	21
15.	ये जंग है जंगे-आज़ादी	22
16.	बोल, अरी ओ धरती बोल . . .	24
17.	ये गांव हमारा, ये गली हमारी	26
18.	हम मेहनतकश जग वालों से	28
19.	समाजवाद	29
20.	गुलमिया अब हम नाहि बजइबो	31
21.	हिल्ले ले झकझोर दुनिया	32
22.	अब मचल उठा है दरिया	34
23.	बदरा पानी दे	35
24.	एका में ताकत भारी रे	36
25.	मंदिर मस्जिद	37
26.	मिल के चलो	38
27.	हाथ कुदाली रे, हाथ हथौड़ा रे . . .	39
28.	क्रान्ति के लिए उठे कदम	41
29.	गीत गा रहे हैं	43
30.	युग की जड़ता के खिलाफ	44
31.	हम जुल्म से लड़ने वाले	45

क्र.	गीत	पेज
32.	पॉल रॉबसन	46
33.	उठाओ आवाज़	47
34.	अब नहीं, और नहीं सहना	48
35.	सर पे आसमान हो सकून का	49
36.	वो सब कुछ करने को तैयार	50
37.	तुम को शहीदों भूले नहीं हम	51
38.	कोह राम मचा देंगे	52
39.	दिल्ली दूर नहीं है यारो	54
40.	इस बार लड़ाई लाने वाला	56
41.	तोड़ो बन्धन तोड़ो	57
42.	जाम करो मिलके	59
43.	संघर्ष हमारा नारा है	60
44.	हड़ताल का गीत	61
45.	धरती को सोना बनाने वाले भाई रे	62
46.	जवानियां उठो . . .	64
47.	उठो साथियों . . .	65
48.	गांव-गांव से उठो . . .	67
49.	तू आ कदम मिला . . .	68
50.	वतन तुम्हारा नौजवान	69
51.	एक हैं हमारी आज राहें	70
52.	इस जहान में जिंदगी के गीत गाएं	72
53.	साथियों सलाम है सलाम है सलाम	73
54.	शहीदों की चिताओं पर	74
55.	होंगे कामयाब . . .	75
56.	पवर्तों को फोड़कर	76
57.	आज़ादी कैसी? किसकी?	77
58.	सौ में सत्तर आदमी . . .	79
59.	क्यों? क्यों? क्यों?	81
60.	नफ़स नफ़स कदम-कदम	83
61.	ये कैसा राज है भाई	86

तू ज़िन्दा है तो...

तू ज़िन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यकीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर

ये ग़म के और चार दिन, सितम के और चार दिन
ये दिन भी जायेंगे गुज़र, गुज़र गये हज़ार दिन
कभी तो होगी इस चमन पे भी बहार की नज़र
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो...

सुबह औ शाम के रंगे हुए गगन को चूमकर
तू सुन ज़मीन गा रही है कब से झूम-झूम कर
तू आ मेरा सिंगार कर तू आ मुझे हसीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो...



हज़ार भेष धर के आई मौत तेरे द्वार पर
मगर तुझे न छल सकी, चली गई वो हार कर
नई सुबह के संग सदा तुझे मिली नई उमर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो. . .

हमारे कारवां को मंज़िलों का इंतज़ार है
ये आंधियों, ये बिजलियों की पीठ पर सवार है
तू आ कदम मिला के चल, चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो. . .

ज़मीं के पेट में पली अगन, पले हैं ज़लज़ले
टिके न टिक सकेंगे भूख रोग के स्वराज ये
मुसीबतों के सर कुचल, चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो. . .

बुरी है आग पेट की, बुरे हैं दिल के दाग ये
न दब सकेंगे, एक दिन बनेंगे इंकलाब ये
गिरेंगे ज़ुल्म के महल, बनेंगे फिर नवीन घर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो. . .

● **शंकर शैलेन्द्र**

वो सुबह कभी तो आयेगी

वो सुबह कभी तो आयेगी
इन काली सदियों के सर से
जब रात का आंचल ढलकेगा
जब दुख के बादल पिघलेंगे
जब सुख का सागर छलकेगा
जब अम्बर झूम के नाचेगा
जब धरती नगमें गायेगी
वो सुबह कभी तो आयेगी

बीतेंगे कभी तो दिन आखिर
ये भूख के और बेकारी के
टूटेंगे कभी तो दिन आखिर
दौलत-ओ-इज़ारेदारी के
जब एक अनोखी दुनिया की
बुनियाद उठाई जाएगी
वो सुबह कभी तो आयेगी



मनहूस समाजी ढांचों में
जब जुल्म न पाले जाएंगे
जब हाथ न काटे जाएंगे
जब सर न उछाले जाएंगे
जेलों के बिना जब दुनिया की
सरकार चलाई जाएगी
वो सुबह कभी तो आयेगी

संसार के सारे मेहनतकश
खेतों से, मिलों से निकलेंगे
बेघर, बेदर, बेबस इन्सान
तारीक बिलों से निकलेंगे
दुनिया अमन, खुशहाली के
फूलों से सजाई जाएगी
वो सुबह कभी तो आयेगी

जब धरती करवट बदलेगी
जब कैद से कैदी छूटेंगे
जब पाप घरौंदे फूटेंगे
जब जुल्म के बन्धन टूटेंगे
उस सुबह को हम ही लायेंगे
वो सुबह हम ही से आएगी
वो सुबह कभी तो आयेगी

● साहिर

तुम्हारे हाथ . . .

तुम्हारे हाथ पत्थरों की तरह संगीन हैं
जेल में गाए गए गीतों की तरह उदास हैं
बोझा ढोने वाले पशुओं की तरह सख्त हैं, सख्त हैं, सख्त हैं
तुम्हारे हाथ भूखे बच्चों के तमतमाये
चेहरों की तरह हैं
तुम्हारे हाथ मधुमक्खियों की तरह दक्ष हैं
ये जहां तुम्हारे हाथों पर नाचता रहता है, ये जहां
तुम्हारे हाथ . . .

आ मेरे लोगों आ मेरे लोगों
यूरोप के लोगों अमरीकी लोगों
सारी दुनिया के लोगों, तुम सतर्क हो, हिम्मती हो
फिर भी अपने हाथों की तरह खोये हुये हो
फिर भी तुम परबशी बनाये जाते रहे हो
तुम्हारे हाथ . . .

आ मेरे लोगों, आ मेरे लोगों
एशियाई लोगों अफ्रीकी लोगों
मध्य पूर्व के लोगों मेरे अपने देश के लोगों
तुम अपने हाथों की तरह घिसे हुए कठोर हो
तुम अपने हाथों की तरह तरोताज़ा युवा हो
आ मेरे लोगों
तुम्हारे हाथ . . .

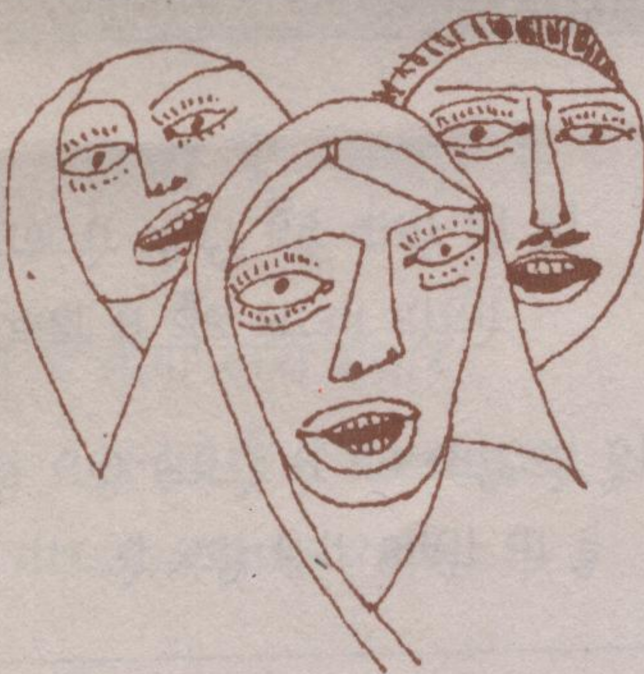
● नाज़िम हिकमत

इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें

इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें
ज़िन्दगी आंसुओं में नहायी न हो
शाम सहमी न हो, रात हो न डरी
भोर की आंख फिर डबडबायी न हो।

सूर्य पर बादलों का न पहरा रहे
रोशनी रोशनाई में डूबी न हो
यूं न ईमान फूटपाथ पर हो खड़ा
हर समय आत्मा सबकी ऊबी न हो
आसमां में टंगी हो न खुशहालियां
कैद महलों में सबकी कमाई न हो।
इसलिए राह . . .





कोई अपनी खुशी के लिए गैर की
रोटियां छीन ले हम नहीं चाहते
छींटकर थोड़ा चारा कोई उम्र की
हर खुशी बीन ले हम नहीं चाहते
हो किसी के लिए मखमली बिस्तरा
और किसी के लिए एक चटाई न हो।
इसलिए राह . . .
अब तमन्नायें फिर न करें खुदकुशी
ख्वाब पर खौफ की चौकसी न रहे
श्रम के पावों में हो ना पड़ी बेड़ियां
शक्ति की पीठ अब ज़्यादती ना सहे
दम ना तोड़े कहीं भूख से बचपना
रोटियों के लिए फिर लड़ाई न हो।
इसलिए राह . . .

● वशिष्ठ अनूप

बुनियाद हिलनी चाहिए . . .

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गांव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

● दुष्यंत कुमार

इस नदी की धार से ठंडी हवा आती तो है
नाव जर्जर ही सही लहरों से टकराती तो है।

एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तो
इस दिए में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

बुनियाद हिलनी चाहिए . . .

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गांव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

● दुष्यंत कुमार

इस नदी की धार से ठंडी हवा आती तो है
नाव जर्जर ही सही लहरों से टकराती तो है।

एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तो
इस दिए में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

जागा रे, जागा रे

जागा रे जागा रे जागा सारा संसार
फूटी किरण लाल खुलता है पूरब का द्वार
जागा रे जागा रे जागा सारा संसार

अंगड़ाई ले के ये धरती उठी है, धरती उठी है
सदियों की ठुकराई मिट्टी उठी है, मिट्टी उठी है
हो... टूटे हो टूटे गुलामी के बन्धन हज़ार - 3
जागा रे . . .

आया ज़माना ये अपना ज़माना, अपना ज़माना
किस्मत का ये रोना गाना पुराना, ग़ाना पुराना
हो... बदलेंगे हम अपनी जीवन की नदिया की धार - 3
जागा रे . . .

पर भूखा कहता है यूं न मरूंगा, यूं न मरूंगा
मैं जा के मालिक को नंगा करूंगा, नंगा करूंगा
हो... ढाह दूंगा दुखियारी लाशों पे उठती दीवार - 3
ओ जागा रे जागा रे जागा सारा संसार

मशालें लेकर चलना

मशालें लेकर चलना, जब तक रात बाकी है
संभलकर हर कदम रखना, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना . . .

मिले मंसूर को सूली, ज़हर सुकरात के हिस्से
रहेगा जुर्म सच कहना, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना . . .

पसीने की तो तुम छोड़ो, लहू मज़दूर का यारो
सस्ता पानी से रहेगा, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना . . .

जब तक रहेंगे सिंगार, हर महफिल पे उल्लू ही
पपीहे की सुनेगा कौन, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना . . .

झुका सर को तू मंदिर में, या मस्जिद में तू कर सजदा
तेरे ग़म तो न होंगे कम, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना . . .

तेरे मस्तक पे होगा हर, पल विद्रोह का निशां
नहीं ये जोश कम होगा, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना . . .

अंधेरों की अदालत में, है क्या फरियाद का फायदा
तू कर संग्राम ए साथी, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना . . .

ले मशालें चल पड़े हैं

ले मशालें चल पड़े हैं लोग मेरे गांव के
अब अंधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गांव के

पूछती है झोंपड़ी और पूछते हैं खेत भी
कब तलक लुटते रहेंगे लोग मेरे गांव के

बिन लड़े कुछ भी नहीं मिलता यहां ये जानकर
अब लड़ाई लड़ रहे हैं लोग मेरे गांव के

चीखती है हर रुकावट ठोकरों की मार से
बेड़ियां खनका रहे हैं लोग मेरे गांव के

लाल सूरज अब उगेगा देश के हर गांव में
अब इकट्ठे हो चले हैं लोग मेरे गांव के

तेलंगाना जी उठेगा देश के हर गांव में
अब आंदोलन ही करेंगे लोग मेरे गांव के

देख यारा जो सुबह लगती है फीकी आजकल
लाल रंग उसमें भरेंगे लोग मेरे गांव के

● बल्लीसिंह चीमा

गर हो सके तो . . .

गर हो सके तो अब कोई शम्मा जलाइए
इस दौरे सियासत का अंधेरा मिटाइए

ज़ुल्मों सितम की आग लगी है यहां-वहां
पानी से नहीं आग से इसको बुझाइए
गर हो . . .

बस कीजिए आकाश में नारे उछालना
ये जंग है इस जंग में ताकत लगाइए
गर हो . . .

क्यों कर रहे हैं आंधियां रुकने का इंतज़ार
आइए हमारे कांधे से कांधा मिलाइए
गर हो . . .

नफरत फैला रहे हैं ये मज़हब के नाम पर
सत्ता के भूखे लोगों से मज़हब बचाइए
गर हो . . .



डोला

डोला हो डोला हो डोला हो डोला - 2
ऊंची-नीची, टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों पे
लिए दौड़े जाते हैं राजा का डोला
हे, अपने जिसम के खून-पसीने के बल पे
चलत है ये डोला
हैय्या ना हैय्या ना हैय्या ना हैय्या
हे डोला हे डोला हे डोला हे डोला



हे, रेशमी लिबासों में सज के बैठे हैं
डोले के भीतर आज
और जगमग जगमग करते हैं सर पे
सोने-चांदी का ताज



हाय मोर बिटवा के नंगे बदन को
ढकने को नहीं इक चोला
अखियों में पानी आए
फिर भी चलत जाए
मनवा को बांधे ई डोला
हे डोला हे डोला हे डोला हे डोला
हे, ऊंची-नीची, टेढ़ी-मेढ़ी . . .
हे, जुग जुग से ई डोला कांधे पे चलत है
कमर टूट-टूट जाए, हो जाए
हे, राजा बाबू सोवत हैं निंदिया की गोद में
अपना पसीना बहा जाए, हो जाए
हे, ऊंचे-नीचे पहाड़ीं पे चलत जात हैं
कदम से कदम मिलाय
अगर फिसल के गिरी हैं ई जानो तो
फिर न उठि है ई डोला
राजा महाराजा का डोला,
बड़े-बड़े लोगन का डोला,
हे डोला हे डोला हे डोला हे डोला
हे, ऊंची-नीची . . .

ऐ लाल फरेरे तेरी कसम

ऐ लाल फरेरे तेरी कसम इस खून का बदला हम लेंगे
इस खून का बदला हम लेंगे - 2
ऐ लाल फरेरे . . .

तुम आतिशे नफरत सुलगाओ मैं जोशे ग़ज़ब गरमाता हूं
तुम तेज़ करो तलवारों को मैं तेशे भाले लाता हूं
ऐ लाल फरेरे . . .

कभी हमने भगतसिंह को कभी दत्त को किया पैदा
लमूंबा बन के आए हम कभी हम रूप उधम का
नहीं परवाह हमें इन फांसिओं की, कतलगाहों की
खुशी से मर तो सकते हैं मगर झुकना नहीं आता
तुम अतिशे . . .
ऐ लाल फरेर . . .

निकाली हमने हैं राहें पहाड़ों तक के सीनों से
चट्टानें चीर दीं हमने बढ़े जब भी यकीनों से
हमारे आहनीं बाज़ू हमारे हाथ फौलादी
जो हम चाहें तो सोना उग पड़े बंजर ज़मीनों से
जो खून गिरा है धरती प्र इन्साफ तलब दीवानों का
बैखौफ ख़तर परवानों का
ऐ लाल फरेरे . . .



हमारे दोनों पहलू हैं कभी शोला कभी शबनम
बराए दुश्मनां खंजर बराए दोस्तां मरहम
हमें पहचान कौन अपना है और कौन बेगाना
कभी हम तीशा-ए नफरत कभी हम इश्क का परचम
जो खून . . .
ऐ लाल फरेरे . . .

हमीं ने रूस के ज़ारों का सिंहासन हिलाया था
हमीं ने इन्कलाबे चीन का झंडा झुलाया था
वो चाहे मशरकी यूरोप था या क्यूबा की धरती थी
हमी नें अहले वफा के जाबिरों को चित्त गिराया था
तुम तेज़ करो . . .
ऐ लाल फरेरे . . .

दिलों में घाव ले के भी चले चलो

चले चलो दिलों में घाव ले के भी चले चलो
चलो लहूलुहान पांव ले के भी चले चलो
चलो कि आज साथ-साथ चलने की ज़रूरतें
चलो कि खत्म हो न जाएं ज़िंदगी की हसरतें
ज़मीन, ख्वाब, ज़िंदगी, यकीन सबको बांटकर
वो चाहते हैं बेबसी में आदमी झुकाए सर
वो चाहते हैं ज़िंदगी हो रोशनी से बेखबर
वो एक-एक करके अब जला रहे हैं हर शहर
जले हुए घरों के ख्वाब ले के भी चले चलो
चले चलो . . .

वो चाहते हैं बांटना दिलों के सारे वलवले
वो चाहते हैं बांटना ये ज़िंदगी के काफिले
वो चाहते हैं खत्म हों उम्मीद के ये सिलसिले
वो चाहते हैं गिर सकें न लूट के ये सब किले
सवाल ही हैं अब जवाब ले के भी चले चलो
चले चलो . . .

वो चाहते हैं जातियों की बोलियों की फूट हो
वो चाहते हैं धर्म को तबाहियों की छूट हो
वो चाहते हैं ज़िंदगी ये हो फरेब, झूठ हो
वो चाहते हैं जिस तरह भी हो मगर ये लूट हो
सिरों पे जो बची है छांव ले के भी चले चलो
चले चलो दिलों में घाव ले के भी चले चलो

● **ब्रजमोहन**

रुके न जो झुके न जो. . .

रुके न जो, झुके न जो, दबे न जो, मिटे न जो,
हम वो इंकलाब हैं, ज़ुल्म का जवाब हैं,
हर शहीद, हर गरीब का यही तो ख्वाब है।

लड़ रहे हैं इसलिए कि प्यार जग में जी सके,
आदमी का खून कोई आदमी न पी सके,
मालिकों. . . मालिकों मजूर के, नौकरों हजूर के,
फर्क को मिटायेंगे, समानता को लायेंगे।
रुके न जो . . .

मानते नहीं हैं हुक्म ज़ुल्मी हुक्मरान का,
युद्ध आज चल रहा है आदमी हैवान का,
सत्य की. . . सत्य की संभाल ढाल, क्रांति की ले मशाल,
एकता के ज़ोर पर हर ज़ुल्म से लड़ जाएंगे।
रुके न जो . . .

मानते नहीं हैं, फर्क हिन्दू-मुसलमान का,
जानते हैं रिश्ता, इन्सान से इन्सान का,
धर्म के. . . धर्म के, देश के, भाषा और भेष के,
द्वन्द्व को मिटायेंगे और एकता को लायेंगे।
रुके न जो . . .

● छात्र युवा संघर्ष वाहिनी

दरबारे वतन में

दरबारे-वतन में जब इक दिन सब जाने वाले जायेंगे
कुछ अपनी सज़ा को पहुंचेंगे कुछ अपनी जज़ा ले जायेंगे

ए खाकनशीनों, उठ बैठो, वह वक्त करीब आ पहुंचा है
जब तख्त गिराये जायेंगे, जब ताज उछाले जायेंगे

अब टूट गिरेंगी ज़ंजीरें, अब ज़िन्दानों की खैर नहीं
जो दरिया झूम के उट्ठे हैं, तिनकों से न टाले जायेंगे

कटते भी चलो, बढ़ते भी चलो,
बाजू भी बहुत हैं, सर भी बहुत
चलते भी चलो के अब डेरे मंज़िल ही पे डाले जायेंगे

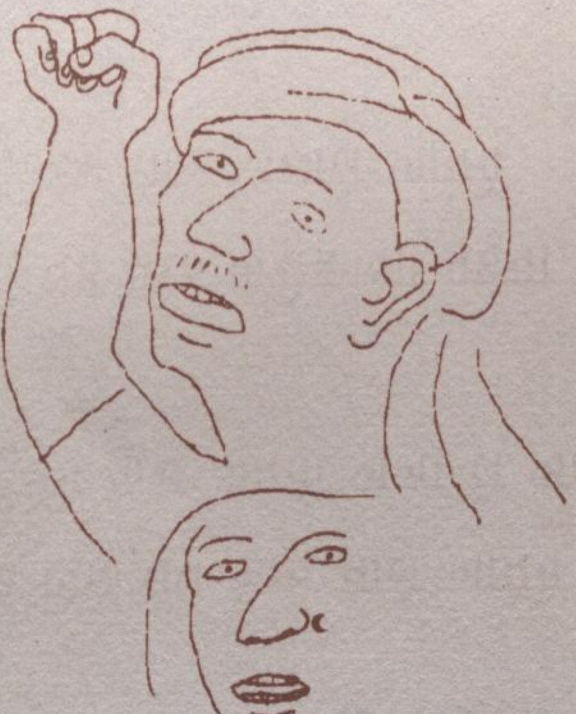
ऐ जुल्म के मातो, लब खोलो,
चुप रहने वालो, चुप कब तक
कुछ हश्र तो उनसे उट्ठेगा, कुछ दूर तो नाले जायेंगे

● फैज़

ये जंग है जंगे-आज़ादी

ये जंग है जंगे-आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले
हम हिन्द के रहने वालों की,
महकूमों की मजबूरों की
आज़ादी के मतवालों की,
दहकानों की मज़दूरों की
ये जंग है . . .

सारा संसार हमारा है
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन
हम अफरंगी हम अफरीकी
हम चीनी जांबाज़े-वतन
हम सुर्ख सिपाही ज़ुल्म शिकन
आहन पैकर, फौलाद-बदन
ये जंग है . . .



वो जंग ही क्या वो अमन ही क्या,
दुश्मन जिसमें नाराज़ न हो
वो दुनिया दुनिया क्या होगी,
जिस दुनिया में स्वराज न हो
वो आज़ादी-आज़ादी क्या,
मज़दूर का जिसमें राज न हो
ये जंग है . . .

लो सुर्ख सवेरा आता है,
आज़ादी का आज़ादी का
गुलनार तराना गाता है,
आज़ादी का आज़ादी का
देखो परचम लहराता है,
आज़ादी का आज़ादी का
ये जंग है . . .

ये जंग है जंगे–आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले
हम हिन्द के रहने वालों की,
महकूमों की मजबूरों की
आज़ादी के मतवालों की,
दहकानों की मज़दूरों की
ये जंग है . . .

● मखदूम मुहिउद्दीन

बोल, अरी ओ धरती बोल...

बोल अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल

बादल बिजली रैन अंधियारी, दुख की मारी परजा सारी
बूढ़े बच्चे सब दुखिया हैं, दुखिया नर हैं दुखिया नारी
बस्ती-बस्ती लूट मची है, सब बनिये हैं सब व्योपारी
बोल, अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल

कलजुग में जग के रखवाले, चांदी वाले, सोने वाले
देसी हों या परदेसी हों, नीले, पीले, गोरे, काले
मक्खी भुनगे भिन-भिन करते, ढूंढे हैं मकड़ी के जाले
बोल, अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल

क्या अफ़रंगी, क्या तातारी आंख बची और बरछी मारी
कब तक जनता की बेचैनी कब तक जनता की बेज़ारी
कब तक सरमाए के धंधे कब तक ये सरमायादारी
बोल, अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल

नामी और मशहूर नहीं हम लेकिन क्या मज़दूर नहीं हम
धोखा और मज़दूरों को दें ऐसे तो मजबूर नहीं हम
मंज़िल अपने पांव के नीचे मंज़िल से अब दूर नहीं हम
बोल, अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल

बोल कि तेरी खिदमत की है, बोल कि तेरा काम किया है
बोल कि तेरे फल खाये हैं, बोल कि तेरा दूध पिया है
बोल कि हमने हश्र उठाया बोल कि हमसे हश्र उठ्ठा है
बोल कि हमसे जागी दुनिया
बोल कि हमसे जागी धरती
बोल, अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल

● मजाज़



ये गांव हमारा, ये गली हमारी

ये गांव हमारा, ये गली हमारी
ये बस्ती हमसे है, हर काम हमसे है
हल अपना, हथौड़ा अपना, हंसिया अपना, कुल्हाड़ अपना
बैल अपना रे, बैलगाड़ी अपनी रे
तो ज़ालिम कौन है उसका जुल्म क्या है।

हल हमने चलाया, खेतों को जगाया
दिन रात जागकर, फसलों को उगाया
अपन बिना फसल नहीं, दूध नहीं, दही नहीं, सारा नहीं
तो ज़ालिम कौन है उसका जुल्म क्या है।
ये गांव हमारा . . .



मिट्टी के लिए हम हैं, महलों के लिए हम हैं
गुलाम के लिए हम हैं, सलाम के लिए हम हैं
अपन बिना खाना नहीं, कपड़ा नहीं, सारा नहीं
तो ज़ालिम कौन है उसका ज़ुल्म क्या है।
ये गांव हमारा . . .

हम खून पसीना करके, तेरे नसीब जगाया
बन्दूक हम चलाया, हम तेरा जान बचाया
मुर्दों को हम उठाया, शहनाई हम बजाया
अरे बन्दूक अपना, शहनाई अपना,
नसीब अपना, सारा अपना
तो ज़ालिम कौन है उसका ज़ुल्म क्या है।
ये गांव हमारा . . .

खेतों में हम झुके हैं, छाती पे ज़मींदारी
मुंह खोले वो तो उसके बदबू की धार निकले
मां बहन से वो लेकर गलीज़ गाली देते
उसको मारना क्या रे तोड़ना क्या रे
उसका जिद्द क्या है उसका ज़ुल्म क्या है।
ये गांव हमारा . . .

गरीब शरीफ मज़दूर किसान, मिलजुल के रहना रे
हिल-मिल के रहना रे हिल-मिल के रहना रे
क्रान्तिकारी झण्डे तले संगठित होना रे
ज़ालिमों को लात मार के भगा दो
ये गांव हमारा . . .

हम मेहनतकश जग वालों से

हम मेहनतकश जग वालों से
जब अपना हिस्सा मांगेंगे
इक खेत नहीं एक देश नहीं
हम सारी दुनिया मांगेंगे। हम मेहनकश . . .

यहां पर्वत-पर्वत हीरे हैं
यहां सागर-सागर मोती हैं
ये सारा माल हमारा है
हम सारा खज़ाना मांगेंगे। हम मेहनकश . . .

जो खून बहा जो बाग उजड़े
जो गीत दिलों में कत्ल हुए
हर कतरे का हर गुंचे का
हर गीत का बदला मांगेंगे। हम मेहनतकश . . .

ये सेंठ व्यापारी, रजवाड़े
दस लाख, तो हम दस लाख करोड़
कब तक ये अमरीका से
जीने का सहारा मांगेंगे। हम मेहनतकश . . .

जब सफ सीधी हो जाएगी
जब सब झगड़े मिट जाएंगे
हम हर इक देश के झंडे पर
एक लाल सितारा मांगेंगे
हम मेहनतकश . . .

● फैज़

समाजवाद

समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई
समाजवाद उनके धीरे-धीरे आई
हाथी से आई
घोड़ा से आई
अंग्रेजी बाजा बजाई
समाजवाद बबुआ . . .
समाजवाद उनके . . .

आंधी से आई
गांधी से आई
बिरला के घर में समाई
समाजवाद बबुआ . . .
समाजवाद उनके . . .

नोटवा से आई
वोटवा से आई
कुर्सी के बदली हो जाई
समाजवाद . . .

कांग्रेस से आई
जनता से आई
झंडा के बदली हो आई
समाजवाद . . .

रूबल से आई
डालर से आई
देसवा के बान्हे धराई
समाजवाद . . .

लाठी से आई
गोली से आई
लेकिन अहिंसा कहाई
समाजवाद . . .

मंहगी ले आई
गरीबी ले आई
केतनो मजूर कमाई
समाजवाद . . .

छुटवा के छुटहन
बड़वा के बड़हन
हिस्सा बराबर लगाई
समाजवाद . . .

परसों ले आई
बरसों ले आई
हरदम अकासे तकाई
समाजवाद . . .

धीरे-धीरे आई
चुप्पे-चुप्पे आई
अंखियन पे पर्दा लगाई
समाजवाद . . .



● गोरख पाण्डेय

गुलमिया अब हम नाहिं बजइबो

गुलमिया अब हम नाहिं बजइबो
अजदिया हमरा के भावेले
झीनी-2 बीनी चदरिया लहरेले तोहरें कान्हे
जब हम तन के परदा मांगे आवे सिपहिया बान्हे
सिपाहिया से अब नाहिं बन्हइबो चदरिया हमराके भावेले
गुलमिया . . .

कंकड़ चुनी-2 महल बनवली हम भइली परदेसी
तोहरे कनुनिया मारल गईली कहवों भइल न पेसी
कनुनिया अइसन हम नाहिं मनिबो
महलिया हमरा के भावेले

गुलमिया . . .

दिनवां खदनवां से सोना निकलली
रतिया लगवलीं अंगूठा
सगरो जिनगिया करजे में डूबल कईल हिसबवा झूठा
जिनगिया अब हम नाहिं डुबइबो
अछरिया हमरा के भावेले

गुलमिया . . .

हमरे जंगरवा से धरती फुलाइल फुलवा में खूसबू भरेले
हम के बनुकिया से कईल बेदखलीं तोहरे मलिकई चलेले
धरतिया अब हम नाहिं गवईबो
बनुकिया हमरा के भावेले

गुलमिया . . .

● गोरख पाण्डेय

हिल्ले ले झकझोर दुनिया

हिल्ले ले झकझोर दुनिया, हिल्ले ले झकझोर दुनिया,
हिल्ले ले झकझो....र दुनिया
जनता की चले पलटनिया, हिल्ले ले झकझोर दुनिया - 2
हिल्ले ले - 3

हिल्ले ले पहाड़वा रे हिल्ले नदी तालवा - 2
सागर में उठे ले लहरिया
हिल्ले ले . . .

हिल्ले ले एशिया रे हिल्ले अफरीकवा - 2
अरे हिल्ले लातीन अमरीकवा
हिल्ले ले . . .

हिल्ले ले अमरीकवा रे हिल्ले नवजारवा - 2
हिल्ले ले सरकारवा रे हिल्ले विश्व बैंकवा - 2
हिल्ले सब लूट के कानूनीया
हिल्ले ले . . .

ढह गए राजवाड़े ढहे महाराजवा - 2
रानी करे धूल में लुटनिया
हिल्ले ले . . .

लड़े ले मजूरबा रे लड़े ले किसानवा - 2
लड़े ले बहिनिया रे लड़े महतारिया - 2
लड़े ले विद्यार्थिया रे लड़े नौजवानवा - 2
लड़े सब शोषण के संगवारिया
हिल्ले ले . . .

बहुत नजदीकीया आज़ादीया के दिनवा - 3
तू ले ले हाथ में तीर कमानवा
हिल्ले ले . . .

● गोरख पाण्डेय



अब मचल उठा है दरिया

अब मचल उठा है दरिया
अब सर पर घिरी बदरिया
उनचास पवन डोले झंझा की बजे बसुरिया
नैया पार लगा, हो नैया पार लगा।

ओ भंवर हज़ारों गहरी धारा, गहरी धारा
मंज़िल का है दूर किनारा, दूर किनारा
ओ भटक न जाना काली रात खिवैया।

ओ निर्बल शत्रु डरना कैसा, डरना कैसा,
तन में दम हो तो गम कैसा, तो गम कैसा
ओ उम्मीदों के पाल उड़ा खिवैया।

सुबह सुहानी तुझे पुकारे, तुझे पुकारे
साहिल तेरी राह निहारे, राह निहारे
ओ सपने सुहाने सच होंगे खिवैया।

● इप्टा

बदरा पानी दे

पास नहीं है बैल - बदरा पानी दे
जालिम है टूबैल - बदरा पानी दे

इज्जतदार गरीब पुकारे, ढोंगी मारे दूध छुआरे
चटक रही खपरैल - बदरा पानी दे
पास नहीं है बैल . . .

छोड़ पंछाही लटके-झटके, एक बार नहला जा डट के
तू गरीब की गैल - बदरा पानी दे
पास नहीं है बैल . . .

ऐसी झड़ी लगा दे प्यारे, भेदभाव मिट जायें हमारे
छूटे सारा मैल - बदरा पानी दे
पास नहीं है बैल . . .

● रमेश रंजक



एका में ताकत भारी रे

एका में ताकत भारी रे
एका में...
एका से ईमान बढ़त है
चौमुख ज़िम्मेदारी रे
एका में...
एका में भुनसार बसत है
काटि देत अंधियारी रे
एका में...
एका से हर चोर डरत है
डरपत अत्याचारी रे
एका में...
एका से भय दूर भगत है
भय से सौ बीमारी रे
एका में...
एका में तन-मन उमगत है
साहस होत हजारी रे
एका में...
एका से हर छान उठत है
जीवन होत सुखारी रे
एका में...
एका में इंसान जगत है
एका गैल हमारी रे
एका में...
एका में ताकत भारी रे

● रमेश रंजक

मंदिर मस्जिद

मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर ने बांट लिया भगवान को
धरती बांटी, सागर बांटा, मत बांटो इन्सान को।

हिंदू कहता मंदिर मेरा, मंदिर मेरा धाम है
मुस्लिम कहता मक्का मेरा, अल्लाह का ईमान है
दोनों लड़ते लड़-लड़ मरते, लड़ते-लड़ते खतम हुए
दोनों ने एक दूजे पे ना जाने क्या-क्या ज़ुल्म किये
किसका ये मकसद है, किसकी चाल है ये जान लो
धरती बांटी सागर बांटा . . .

नेता ने सत्ता की खातिर कौमवाद से काम लिया
धरम के ठेकेदार से मिलकर लोगों को नाकाम किया
भाई बंटें टुकड़े-टुकड़े में नेता का ईमान बढ़ा
वोट मिले और नेता जीता शोषण को आधार मिला
वक़्त नहीं बीता है अब भी वक़्त की कीमत जान लो
धरती बांटी सागर बांटा . . .

प्रजातंत्र में प्रजा को लूटे ये कैसी सरकार है
लाठी गोली ईश्वर अल्लाह ये सारे हथियार हैं
इनसे बचो और बच के रहो और लड़कर इनसे जीत लो
हक है तुम्हारा चैन से रहना अपने हक को छीन लो
अगर हो तुम शैतानी से तंग, खत्म करो शैतान को
धरती बांटी सागर बांटा . . .

● **विनय महाजन**

मिल के चलो

मिल के चलो, मिल के चलो, मिल के चलो
चलो भाई, मिल के चलो, मिल के चलो, मिल के चलो
ये वक़्त की आवाज़ है मिल के चलो
ये ज़िन्दगी का राज़ है मिल के चलो
मिल के चलो . . .

आज दिल की रंजिशें मिटा के आ. . .
आज भेद-भाव सब भुला के आ. . .
आज़ादी से है प्यार जिन्हें देश से है प्रेम
कदम से कदम और दिल से दिल मिला के आ.
मिल के चलो . . .

ये भूख क्यों ये ज़ुल्म का है ज़ोर क्यों
ज़ोर क्यों, ज़ोर क्यों
ये जंग-जंग-जंग का है शोर क्यों
शोर क्यों, शोर क्यों
हर इक नज़र बुझी-बुझी हरेक दिल उदास
बहुत फरेब खाये अब फरेब और क्यों
मिल के चलो . . .

जैसे सुर से सुर मिले हों राग के
राग के, राग के
जैसे शोले मिल के बढ़ें आग के
आग के, आग के
जिस तरह चिराग से जले चिराग
ऐसे चलो भेद तेरा मेरा त्याग के
मिल के चलो . . .

● **प्रेम धवन**

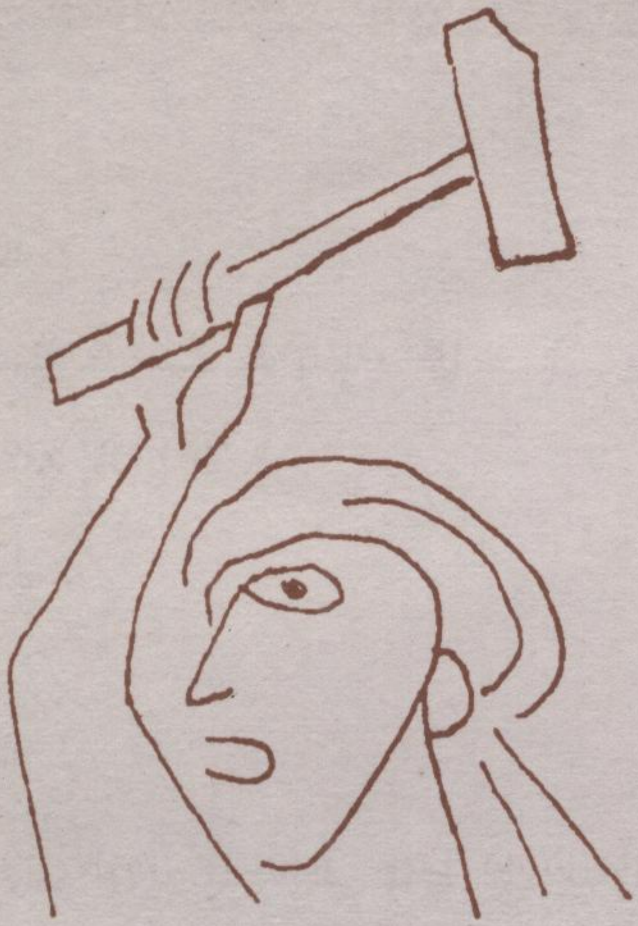
हाथ कुदाली रे, हाथ हथौड़ा रे. . .

हाथ कुदाली रे
ओ भैय्या हाथ कुदाली रे
तेरे दम से ही धरती पर है हरियाली रे
हाथ कुदाली रे . . .

बोता है खेतों में जीवन तू ही तो हर साल
किन्तु महाजन हर मौसम में करता तुझे हलाल
दाब महाजन की गरदन अब चरबी वाली रे
हाथ कुदाली रे . . .

गर्मी सर्दी आंधी बारिश चाहे हो तूफ़ान
ज़मींदार के कोड़े तुझको करते लहू लुहान
ज़मींदार की आंखों से अब खींच ले लाली रे
हाथ कुदाली रे . . .

हाथ हथौड़ा रे
ओ भैया हाथ हथौड़ा रे
तेरी छाती से बढ़कर न पर्वत चौड़ा रे
हाथ हथौड़ा रे . . .



गला-गला कर लोहे को तू खुद इस्पात बना है
तेरे आगे कोई सीना कब तक भला तना है
हर युग में खूनी जबड़ों को तूने तोड़ा रे
हाथ हथौड़ा रे . . .

ज़हरीले सांपों का दुश्मन तू सबसे पहला है
ज़हरीले सांपों को तूने हर युग में कुचला है
ज़िंदा अपने दुश्मन को न तूने छोड़ा रे
हाथ हथौड़ा रे . . .

● **ब्रजमोहन**

क्रान्ति के लिए उठे कदम

क्रान्ति के लिए उठे कदम - 2
क्रान्ति के लिए जली मशाल - 2
भूख के विरुद्ध भात के लिए
रात के विरुद्ध प्रातः के लिए
मेहनती गरीब जात के लिए
हम लड़ेंगे हमने ली कसम - 3
क्रान्ति . . .

छिन रही हैं आदमी की रोटियां
बिक रही हैं आदमी की बोटियां
किन्तु सेठ भर रहे हैं कोठियां
लूट का ये राज हो खत्म - 3
क्रान्ति . . .

गोलियों की गन्ध में घुटी हवा
हिन्द जेल आग में तपा तवा
खद्दरी सफेद कोढ़ की दवा
खून का ये राज हो खतम - 3
शान्ति के लिए उठे कदम
क्रान्ति . . .



जंग चाहते हैं आज जंगखोर
ताकि राज कर सकें हरामखोर
पर जवान हैं, जवान हैं कठोर
डालरों का जोर हो खत्म - 3
रूबलों का जोर हो खत्म - 3
शान्ति . . .
क्रान्ति . . .

भूख के विरुद्ध भात के लिए
रात के विरुद्ध प्रातः के लिए
मेहनती गरीब जात के लिए
हम लड़ेंगे हमने ली कसम - 3

● **शंकर शैलेन्द्र**

गीत गा रहे हैं

आ गये यहां जवां कदम मंज़िलों को ढूंढते हुए
गीत गा रहे हैं आज हम रागिनी को ढूंढते हुए

दो दिलों में ये उमंग है ये जहां नया बसाएंगे
ज़िन्दगी का तौर आज से दोस्तों को हम सिखाएंगे
फूल दो नए खिलाएंगे ताज़गी को ढूंढते हुए
गीत गा रहे हैं आज . . .

कोढ़ की तरह दहेज है आज देश के समाज में
है तबाह आज आदमी लूट पर टिके समाज में
हम समाज भी बनाएंगे आदमी को ढूंढते हुए
गीत गा रहे हैं आज . . .

फिर न रो सके कोई दुल्हन ज़ोर-जुल्म का न हो निशां
मुस्करा उठे धरा-गगन हम रचेंगे ऐसी दास्तां
यूं सजाएंगे वतन को हम हर खुशी को ढूंढते हुए
गीत गा रहे हैं आज . . .

युग की जड़ता के खिलाफ

युग की जड़ता के खिलाफ, एक इंकलाब है - 2
हिन्द के जवानों का, इक सुनहरा ख्वाब है - 2

भारतीय सांस्कृतिक क्रांति, मानवीय सांस्कृतिक क्रांति - 2
युग की . . .

व्योम में हमारी पहुंच बढ़ रही है आज, पर - 2
दूर हो रहा है घर पड़ोसी का - 2
आदमी को आदमी के करीब लायेगी - 2
भारतीय सांस्कृतिक क्रांति, मानवीय सांस्कृतिक क्रांति - 2
युग की . . .

आदमी भविष्य में, यंत्र का न हो गुलाम - 2
मानवीय-गुण बढ़ेंगे काम से - 2
ऐसे योग युक्त काम, हर जगह चलाऐगी - 2
भारतीय सांस्कृतिक क्रांति, मानवीय सांस्कृतिक क्रांति - 2
युग की . . .

ले के हाथ हल कुदाल, और ज्ञान की मशाल - 2
आओ चलें साथ-साथ गांव को - 2
क्योंकि गांव-गांव से, दीनता मिटायेगी - 2
भारतीय सांस्कृतिक क्रांति, मानवीय सांस्कृतिक क्रांति - 2
युग की . . .

● **अशोक भार्गव**

युग की जड़ता के खिलाफ

युग की जड़ता के खिलाफ, एक इंकलाब है - 2
हिन्द के जवानों का, इक सुनहरा ख्वाब है - 2
भारतीय सांस्कृतिक क्रांति, मानवीय सांस्कृतिक क्रांति - 2
युग की . . .

व्योम में हमारी पहुंच बढ़ रही है आज, पर - 2
दूर हो रहा है घर पड़ोसी का - 2
आदमी को आदमी के करीब लायेगी - 2
भारतीय सांस्कृतिक क्रांति, मानवीय सांस्कृतिक क्रांति - 2
युग की . . .

आदमी भविष्य में, यंत्र का न हो गुलाम - 2
मानवीय-गुण बढ़ेंगे काम से - 2
ऐसे योग युक्त काम, हर जगह चलाऐगी - 2
भारतीय सांस्कृतिक क्रांति, मानवीय सांस्कृतिक क्रांति - 2
युग की . . .

ले के हाथ हल कुदाल, और ज्ञान की मशाल - 2
आओ चलें साथ-साथ गांव को - 2
क्योंकि गांव-गांव से, दीनता मिटायेगी - 2
भारतीय सांस्कृतिक क्रांति, मानवीय सांस्कृतिक क्रांति - 2
युग की . . .

● अशोक भार्गव

हम ज़ुल्म से लड़ने वाले

हम ज़ुल्म से लड़ने वाले सब एक हैं, एक हैं
हम कोरिया में, हम हैं हिन्दुस्तान में
हम रूस में हैं, चीन में, जापान में
हम अमरीका में, हम हैं इंग्लिस्तान में
हम हैं दुनिया के हर सच्चे इन्सान में
हम क्या गोरे क्या काले सब एक हैं, एक हैं
हम ज़ुल्म से . . .

इन बस्तियों को जगमगाना है सदा
इन खेतियों को लहलहाना है सदा
उठाओ हाथ गाओ गीत अमन के
कि ज़िन्दगी के गीत गाने हैं सदा
हम मौत पे हंसने वाले सब एक हैं, एक हैं
हम ज़ुल्म से . . .

हम बच्चों की मुस्कान बेचते नहीं
हम मांओं के अरमान बेचते नहीं
एटम के और दौलत के बाज़ार में
हम इन्सानों की जान बेचते नहीं
आज़ादों के मतवाले सब एक हैं, एक हैं
हम ज़ुल्म से . . .

हम अजंता और ताज के फनकार हैं
हम पेरिस के और रोम के श्रृंगार हैं
हम हंसते-गाते कारखानों के गीत हैं
हम चलती-फिरती सड़कों की रफ्तार हैं
हम जीवन के उजियारे, सब एक हैं, एक हैं
हम ज़ुल्म से . . .

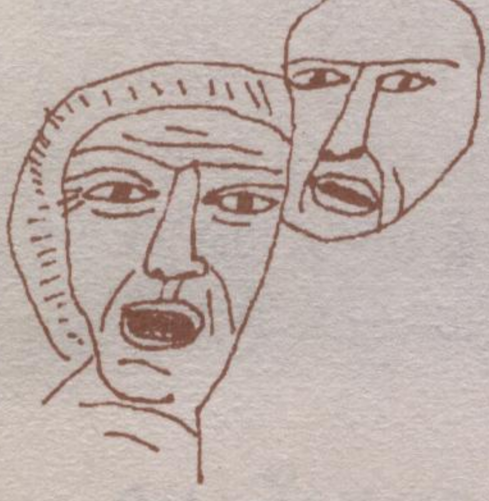
पॉल रॉबसन

वो हमारे गीत क्यों रोकना चाहते हैं
नीग्रो भाई हमारे पाल रॉबसन।

हम अपनी आवाज़ उठा रहे हैं
वो नाराज़ क्यों – 2
नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन।

वो डरते हैं ज़िन्दगी से, वो डरते हैं मौत से
वो डरते हैं इतिहास से
वो डरते हैं, रॉबसन।

हमारे ये कदमों से डरते हैं
जनता की ये चेतना से डरते हैं, रॉबसन
वो क्रान्ति के जय-डम्बरू से डरते हैं, रॉबसन
नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन।



● नाज़िम हिकमत

उठाओ आवाज़

जंगखोर, चारों ओर, हो रहे हैं तैयार
कर रहे वार वे शांति पे बार-बार
कमर कसो, हो तैयार, मिलके उठाओ आवाज़
उठाओ आवाज़, जंग नहीं, जग नहीं, उठाओ आवाज़।

महलों की जगमगाती रोशनी और न झिलमिलाए
खूंखार सांप अपना फन कभी उठा न पाए
बीसवीं सदी को देखो जंग से छिन्न भिन्न आज।
उठाओ आवाज़ . . .

हमलेवार बाज आज खून की तलाश में
प्यार प्रीत चैन-अमन मिटाने के जुनून में
मुस्कुराते बच्चों के हरे-भरे जहान में
उठा धुआं बारूद का हवा में आसमान में
जंग नहीं, जंग नहीं, एकता का छेड़ो साज़।
उठाओ आवाज़ . . .



अब नहीं, और नहीं सहना

अब नहीं, और नहीं सहना
विश्व के द्वार पर युद्ध की गर्जना
अब नहीं, और नहीं सहना

मुक्त दिन, मुक्त प्राण, मुक्त हर सांस है
सभ्यता के दुश्मनों को खून की प्यास है
जंगखोर कर रहे हैं युद्ध की घोषणा
अब नहीं, और नहीं सहना

जंग नहीं, जंग नहीं, उठाओ शांति की ध्वजा
एक संग मिलाओ आवाज़, हो न ये विभीषिका
फिर न हो नागासाकी, फिर न हो हिरोशिमा
अब नहीं और नहीं सहना



सर पे आसमान हो सकून का

सर पे आसमान हो सकून का, सकून का
पांव के तले ज़मीन हो जो प्यार दे सके
हवाएं हों जो दुख चुरा के मुस्कुरा के उड़ चलें
अगर जो ऐसा हो सके तो इस जहां को फूंक दो
लहू से तर-बतर हरेक आसमां को फूंक दो

पंछियों के कारवां उड़ें तो फिर थमें नहीं
दूर तक शिकारियों का खौफ हो न जाल हो
सफर न हो उदासियों का जंगलों के रास्ते
किसी के स्वप्न टूटने की न कोई मिसाल हो
अगर जो ऐसा हो सके . . .

फसल से बात करके घर में सुख से सोए हर किसान
चिमनियों की आग में जलें न चाहतों के घर
सभी के ओंठ गा उठें हरेक दिल में गीत हो
किसी की आंख में न दुश्मनी का बच सके ज़हर
अगर जो ऐसा हो सके . . .

अपने मन में भर सुबह के सूर्य की उजास को
नई इमारतों की नींव में जो सर बिछा सको
ज़िन्दगी को मौत से अगर जो तुम बचा सको
जलाओ ये जहां अगर नया जहां बना सको

नया जहां बना सको तो इस जहां को फूंक दो
लहू से तर-बतर हरेक आसमां को फूंक दो

● **ब्रजमोहन**

वो सब कुछ करने को तैयार

वो सब कुछ करने को तैयार
सभी अफसर उनके
जेल और सुधार घर उनके
सभी दफ्तर उनके
वो सब कुछ . . .

कानूनी किताबें उनकी
कारखाने हथियारों के
पादरी प्रोफेसर उनके
जज और जेलर तक उनके
सभी अफसर उनके
वो सब कुछ . . .

अखबार, छापेखाने
हमें अपना बनाने के
बहाने चुप कराने के
नेता और गुण्डे तक उनके
सभी अफसर उनके
वो सब कुछ . . .

एक दिन ऐसा आएगा
पैसा फिर काम न आएगा
धरा हथियार रह जाएगा
और ये जल्दी ही होगा - 2
ये ढांचा बदल जाएगा - 3

● ब्रेख़्त

तुम को शहीदों भूले नहीं हम

तुमको शहीदों
भूले नहीं हम
भूली नहीं संग्रामी जनता
भूला नहीं रक्तरंजित लाल निशान
भूली नहीं विप्लवी क्षमता
तुमको शहीदों . . .

कसम ली है होगा पूरा
प्रतिशोध हमारा महान
न सहा, न सहेंगे और अब हम
तेरा यह अपमान
तुमको शहीदों . . .

व्यर्थ न होगा रक्त तेरा
जलेगा विद्रोही सीने में
इस लहू से रंगी छटा
खिल उठेगी सूर्योदय में
तुमको शहीदों . . .

कोह राम मचा देंगे

हर दिल में बगावत के शोलों को जला देंगे
हम जंगे अवामी से कोह राम मचा देंगे
हो जाएगी ये दुनिया फिर तेरे नसीबों की
मज़दूर किसानों की, भूखों की, गरीबों की
रौंदे हुए ज़र्रों को खुरशीद बना देंगे।
खुरशीद बना देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

हक्क छीनने वालों से उम्मीदे कर्म क्यों हो
इन सांप लुटेरों से हमको यह भ्रम क्यों हो
हम ताकते बाजू से जाबिर को मिटा देंगे।
जाबिर को मिटा देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

महकूम जो उठ बैठें हर जुल्म पे भारी हैं
ये खेत हमारे हैं मिलें भी हमारी हैं
हर चीज़ हमारी है हाकम को बता देंगे।
हाकम को बता देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

किस्मत के कलोरों से बहलाया गया हमें
तोपों से, फरेबों से हथियाया गया हमें
यह झूठ का सिहांसन ठोकर से गिरा देंगे।
ठोकर से गिरा देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .



कुछ सोच के ही हमने तलवार निकाली है
हालात से तंग आकर बन्दूक संभाली है
हम खूने सितमगर से धरती को सजा देंगे।
धरती को सजा देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

फिर जागा तेलंगाना, बंगाल ने करवट ली
हर खेत सुलग उठे, फिर आतिशे ग़म भड़की
इन कहर के शोलों से शैतान जला देंगे।
शैतान जला देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

दिल्ली के खुदा बन्दों एलान हमारा है
ऐ कातिलों बदकारों फरमान हमारा है
तुम दुश्मन-इन्सां हो हम तुख्में उड़ा देंगे।
हम तुख्में उड़ा देंगे - 2
हम जंगे अवामी से . . .

दिल्ली दूर नहीं है यारो

दिल्ली दूर नहीं है यारो
दिल्ली के असली हकदारो। दिल्ली दूर . . .

भूखे पेटों, नंगे बदनों
दुख के पोसों दर्द के पालों
हम वतनों अफ़लास के मारों

दिल्ली दूर नहीं है यारो
दो फूकों से गिर जाएगी
शीशा फूटके रह जाएगा
जादू टूट के रह जाएगा

नित दिन को पौ फटने से पहले
तपते सूरज की गर्मी में
शाम के साये ढल जाने तक
तुम हल जोतो फसल उगाओ
खेत का ज़र्रा-ज़र्रा सींचो हंसते गाते खून बहाओ
लेकिन खुद भूखे के भूखे, तुम पर यह भी जब्र हुआ है
जब्र की आखिर हद होती है
सब्र की आखिर हद होती है
दिल्ली दूर . . .

फाकों से तंग आकर अक्सर
तुमने खुदकशियां भी की हैं
मीनारों से कूद पड़े हो
गाड़ी के पहिओं से लड़े हो
बीबी को नीलाम किया है, बहन का चर्चा आम किया है
तुम पर यह भी जब्र हुआ है
जब्र की आखिर हद होती है, सब्र की आखिर हद होती है
दिल्ली दूर . . .

हम वतनों अफ़लास के मारों
दिल्ली के असली हकदारों
खेतों की आगोश से उट्ठो
ले हाथों में लावा उगलो
गंदम के बोरों तक फैलो
धान के गोदामों तक नाचो
तेशे भाले नेजे खंजर हाथ में जो कुछ भी है थामो
आंधी वाला रूप बना के, तूफानी जुरत अपना के
डेरे डालो नगरी-नगरी
कहर मचा दो बस्ती-बस्ती

हम मुट्ठी भर दानों की खातिर
तुमने सदियों सब्र किया है
सब्र की आखिर हद होती है
जब्र की आखिर हद होती है।
दिल्ली दूर . . .

इस बार लड़ाई लाने वाला

इस बार लड़ाई लाने वाला, बच के न जाने पाएगा
तू धन दौलत का लोभी डाकू, पिसने वालों की दुनिया में
गर आग लगाने आएगा, इस आग में खुद जल जाएगा

तुम एटम बम, डॉलर के व्यापारी, मददगार गद्दारों के
है लूट तुम्हारा धर्म, पुजारी तुम खूनी तलवारों के
हमको डर किसका, भूत तुम्हारा तुमको ही खा जाएगा
इस बार लड़ाई . . .

हम माथे का सिंदूर, गरजता गाढ़ा खून न बेचेंगे
नन्हें बच्चों की हंसी न बेचेंगे, हम खुशी न बेचेंगे
नर-नारी का व्यापारी, मौत के हाथों खुद बिक जाएगा
इस बार लड़ाई . . .

तुम फौज लिए जिन सड़कों से गुजरोगे, हम टक्कर लेंगे
आकाश में शोले बन के उड़ेंगे, हम सागर खौला देंगे
जो चाल चलेगा हिटलर की, हिटलर की तरह मिट जाएगा
इस बार लड़ाई . . .

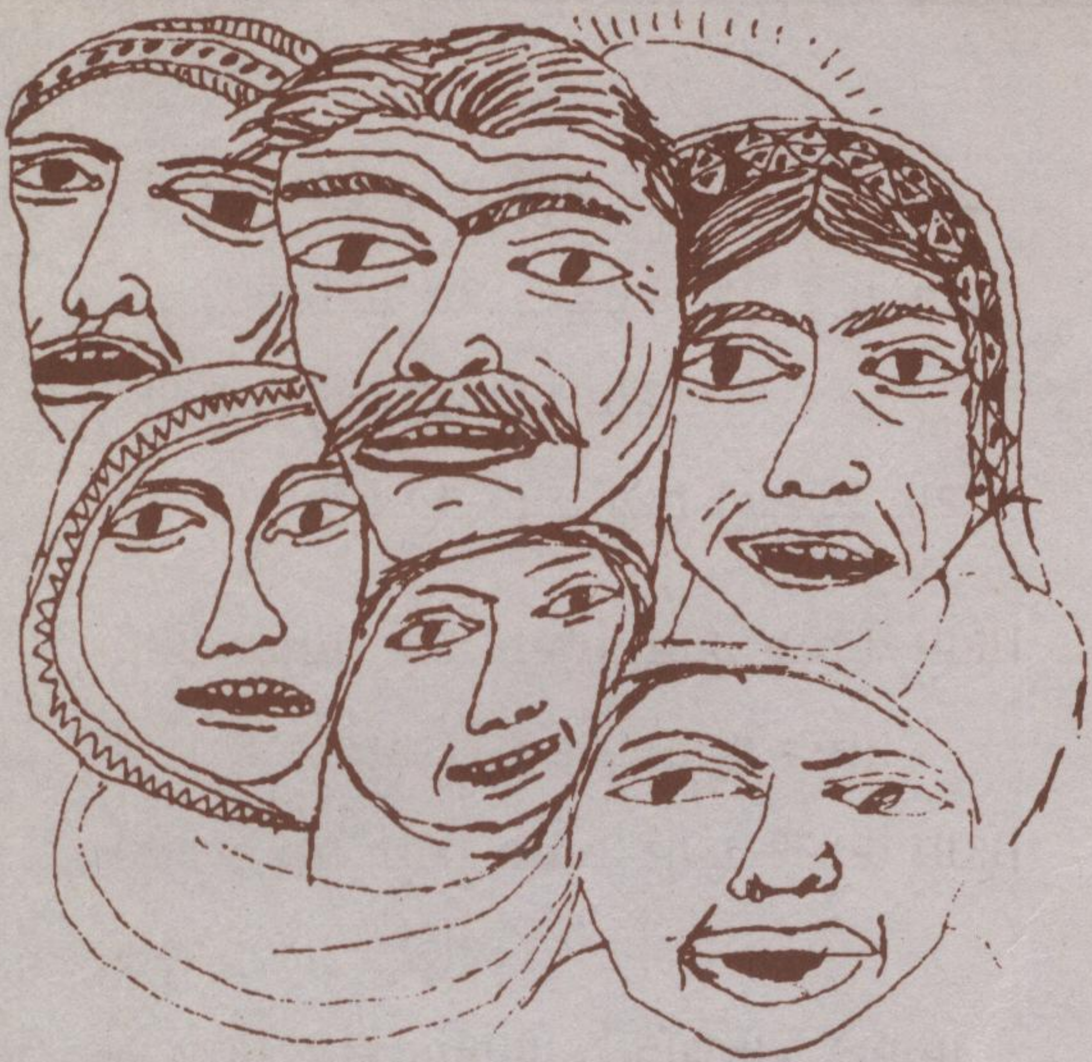
तोड़ो बन्धन तोड़ो. . .

तोड़ो बन्धन तोड़ो, ये अन्याय के बन्धन
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो।

हम क्या जानें भारत में भी आया अपना राज
ओ भैया आया अपना राज
आज भी हम भूखे-नंगे हैं आज भी हम मोहताज
ओ भैया आज भी हम मोहताज

रोटी मांगें तो खायें हम लाठी-गोली आज
थैलीशाहों की ठोकर में है सारे देश की लाज
ऐ मज़दूर किसानों, ऐ दुखियारे इन्सानों
ऐ छात्रों और जवानों, ऐ दुखियारे इन्सानों
झूठी आशा छोड़ो,
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो।
तोड़ो बन्धन तोड़ो, ये अन्याय के बन्धन,
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो।

सौ-सौ वादे करके हमसे लिये जिन्होंने वोट
ओ भैया लिये जिन्होंने वोट
गरीबी हटाओ कह के हमको देते हैं ये चोट
ओ भैया देते हैं वो चोट



नौकरी मांगें नारे मिलते कैसा झूठा राज
शोषण के जूतों से पिसकर रोता भारत आज
ऐ मज़दूर किसानों, ऐ दुखियारे इन्सानों
ऐ छात्रों और जवानों, ऐ दुखियारे इन्सानों
झूठी आशा छोड़ो,
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो।
तोड़ो बन्धन तोड़ो, ये अन्याय के बन्धन
तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो बन्धन, तोड़ो।

● इप्टा

जाम करो मिलके

खाने को ना रोटी देंगे किशन कन्हैया
जाम करो मिलके ये शोषण का पहिया
मालिकों से लड़ने को एक हो जा भैया - 2
तेरी ही कमाई पे खड़े ये कारखाने - 2
तुझको ही मिलते ना पेट-भर दाने - 2
गिद्धों के जैसा तुझसे मालिक का रवैया - 2
मालिकों से . . .

हमसे ना कम होगी मालिकों की दूरी - 2
खून चूस-चूस के जो देता है मजूरी - 2
अपनी नैया के हम ही खिवैया - 2
मालिकों से . . .

अपने दिलों में सदा उनके ही गीत - 2
चाहते बदलना जो दुनिया की रीत - 2
सीने में हमारे ज़िंदा किश्ता-भूमैया - 2
मालिकों से . . .

● ब्रजमोहन

संघर्ष हमारा नारा है

हर जोर-जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है
तुमने मांगें ठुकराई हैं तुमने तोड़ा है हर वादा
छीना हमसे सस्ता अनाज तुम छटनी पर हो आमादा
लो अपनी भी तैयारी है लो हमने भी ललकारा है
हर जोर-जुल्म . . .

मत करो बहाने संकट है घाटा दिखलाना फैशन है
इन बनियों चोर लुटेरों को क्या सरकारी कंसेशन है
बगलें मत झांको दो जवाब क्या यही स्वराज तुम्हारा है
हर जोर-जुल्म . . .

समझौता कैसा समझौता, हमला तो तुमने बोला है
मंहगी ने हमें निगलने को दानव जैसा मुंह खोला है
हम मौत के जबड़े तोड़ेंगे, एका हथियार हमारा है
हर जोर-जुल्म की . . .

अब संभलें समझौतापरस्त जनता को जो करते यतीम
हम सब समझौतेबाजों को अब अलग करेंगे बीन-बीन
जो रोकेगा बह जाएगा, ये वो तूफानी धारा है
हर जोर-जुल्म . . .

● शंकर शैलेन्द्र

हड़ताल का गीत

जब तक मालिक की नस-नस को हिला न दे भूचाल
जारी है हड़ताल हमारी जारी है हड़ताल
न टूटे हड़ताल हमारी न टूटे हड़ताल

हम इतने सारों को मिल ये गिद्ध अकेला खाता
और हमारे हिस्से का भी अपने घर ले जाता
हक मांगें हम अपना तो ये गुण्डों को बुलवाता
हम सबका शोषण करने को चले ये सौ-सौ चाल
जारी है . . .

सावधान ऐसे लोगों से जो बिचौलिया होते
और हमारे बीच सदा जो बीज फूट के बोते
और कि जिनके दम पर अफसर मालिक चैन से सोते
देखेंगे उनको भी जो हैं सरकारी दलाल
जारी है . . .

सही-सही मांगों को लेकर जब हम सामने आए
इसके अपने सगे सिपाही बन्दूकें ले आए
जाने अपने कितने साथी इसने ही मरवाए
लेकिन सुन लो अब हम सारे जलकर बने मशाल
जारी है . . .

धरती को सोना बनाने वाले भाई रे

धरती को सोना बनाने वाले भाई रे – 2
माटी से हीरा उगानेवाले भाई रे – 2
अपना पसीना बहानेवाले भाई रे – 2
उठ, तेरी मेहनत को लूटें हैं कसाई रे
धरती को सोना . . .

मिल, कोठी, कारें, ये सड़कें ये इंजन – 2
इन सब में तेरी ही मेहनत की धड़कन – 2
तेरे ही हाथों ने दुनिया बनाई – 2
तूने ही भरपेट रोटी न खाई – 2
हंसी तेरे होठों की किसने चुराई रे
धरती को सोना . . .





मिल-कारखानों में, कोयला-खदानों में – 2
खेत-खलिहानों में, सोने की खानों में – 2
बहता है तेरा ही खून पसीना – 2
ज़ालिम लुटेरों का पत्थर का सीना – 2
सेठों के पेटों में है तेरी कमाई रे
धरती को सोना . . .

धरती भी तेरी ये अम्बर भी तेरा – 2
तुझको ही लाना है अपना सवेरा – 2
तू ही अंधेरों में सूरज है भाई – 2
तू ही लड़ेगा, सुबह की लड़ाई – 2
तभी सारी दुनिया ये लेगी अंगड़ाई रे
धरती को सोना . . .

● ब्रजमोहन

जवानियां उठो. . .

जवानियां उठो कि रास्ते तुम्हें पुकारते,
जवानियां उठो कि रास्ते तुम्हें निहारते।

उठो कि जात-पात का गुबार धुल के मिट सके,
उठो कि ऊंच-नीच का जहां में फर्क मिट सके।

कोई किसी पे ज़ोर-ज़ुल्म अब न कर सके यहां,
अकाल और भूख से कोई न मर सके यहां।

उठो कि आंसुओं का राज इस ज़मीं से खत्म हो,
उठो कि हिटलरी मिज़ाज इस ज़मीं से खत्म हो।

उठो कि ज़िन्दगी का आफ़ताब जगमगा सके,
उठो कि मौत का निशान अब न सर उठा सके।

जवानियां उठो कि रास्ते तुम्हें पुकारते,
जवानियां उठो कि रास्ते तुम्हें निहारते।

उठो साथियो. . .

उठो साथियो आज चलें हम मुक्त कराने देश को
सदियों से गुलाम आज तक अपने प्यारे देश को

देखो बिड़ला-टाटा-बाटा - 2
कहते रोज़-रोज़ का घाटा - 2
अपने घर की भरें तिजोरी भेजें माल विदेश को - 2
सदियों से गुलाम. . .



देखो जाति धरम का घेरा - 2
देखो दल्लालों का फेरा - 2
पण्डित, नेता, सेठ, मौलवी लूटें अपने देश को - 2
सदियों से गुलाम. . .

लकदक नेता खद्दर-धारी - 2
कुर्सी लालच मारा-मारी - 2
बगुला भगत बनें जनता में नोचो नकली भेष को - 2
सदियों से गुलाम. . .

मालिक अपनाए हथकण्डे - 2
उसके कई पालतू गुण्डे - 2
नेता-अफसर उसके बन्दे - 2
खाते हम सरकारी डण्डे - 2
कोर्ट, कचहरी, अंधी, बहरी नहीं सुनेगी केस को - 2
सदियों से गुलाम. . .
बहती गंगा-जमुना धारा - 2
सारा हिन्दुस्तान हमारा - 2
अपना खुद ही बनें सहारा - 2
एका यही समय का नारा - 2
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन एक करें हम देश को - 2
सदियों से गुलाम. . .

● **अरविंद चतुर्वेदी**

गांव-गांव से उठो . . .

गांव-गांव से उठो बस्ती-बस्ती से उठो - 2
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो - 2

हाथ में जिसके कलम है कलम लिये उठो - 2
बाजा बजाने वालों तुम बाजा लिये उठो - 2
गांव-गांव से उठो. . .

हाथ में जिसके औज़ार है औज़ार लिये उठो - 2
पास में जिसके कुछ भी नहीं आवाज़ लिये उठो - 2
गांव-गांव से उठो. . .

● **नेपाली लोकगीत से**



तू आ कदम मिला. . .

ये फैसले का वक्त है तू आ कदम मिला
ये इम्तिहान सख़्त है तू आ कदम मिला।

हर दिशा में भोर के सूरज निकल रहे
आस्मां में लाल फरेरे मचल रहे
मुक्ति-कारवां से कारवां मिल रहे
तू बोल किसके साथ है, तू आ ज़रा बता।
ये फैसले का वक्त है. . .

कैद में पड़ी हुई ज़मीं बुला रही
चीखती हुई ये मशीनें बुला रहीं
बेजार बेकरार हवाएं बुला रहीं
ये जंगे-इन्किलाब है तू आ लहू मिला।
ये फैसले का वक्त है. . .

गा रही अंधेरी रात में दिये की लौ
अब जहां से अंधकार को समेट दो
हर ओर ज़िंदगी की रोशनी बिखेर दो
ये ज़िंदगी का गीत है ज़िंदा लबों से गा।
ये फैसले का वक्त है. . .

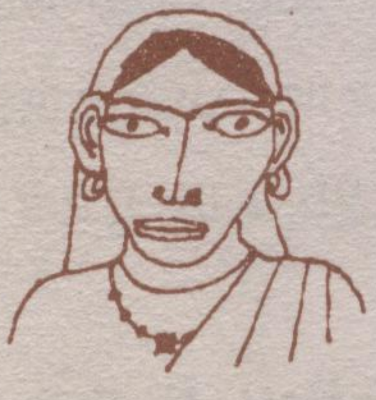
● आनन्द क्रान्तिवर्धन

वतन तुम्हारा नौजवान

तुम्हें वतन पुकारता, वतन तुम्हारा नौजवान
जागे हैं वतन के लोग, जागा है सारा जहां
आ... वतन तुम्हारा नौजवान

बीत गये यूं ही तो बहुत दिन, बहुत दिन
वक्त मांगे एकता विभेदहीन, विभेदहीन
तुम्हारा प्रण मेरा यतन जगायेगा नवचेतना
पुकारता...आ...वतन तुम्हारा नौजवान

कभी तो आयेगा वो दिन सुबह मुस्करायेगी
नहीं है डर
चिराग जले ये रात ढले, ये गम के चार दिन
कभी तो आयेगा समीर झूम के
खिलेंगे सौ फूल उसे चूमके
सदियों से जो सोये हैं अंगड़ाई ले के उठेंगे
पुकारता...आ...वतन तुम्हारा नौजवान



● **सलिल चौधरी**

एक हैं हमारी आज राहें

एक हैं हमारी आज राहें
और एक है हमारा आज गान
चाहे लाख तूफ़ान आयें
रहेंगे एक सब जहां के नौजवान

हरेक देश और हर जाति
जवानों के ही दम से जगमगाती
गा रहे हैं नौजवां बनाओ इक नया जहां
कि जिसमें हो न ज़ुल्म का निशान

गाते गीत अमन के बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो
अपनी आन के लिये लड़े चलो, लड़े चलो, लड़े चलो

हम हैं जवान हम चलें तो
साथ चलते हैं ज़मीनो-आसमान

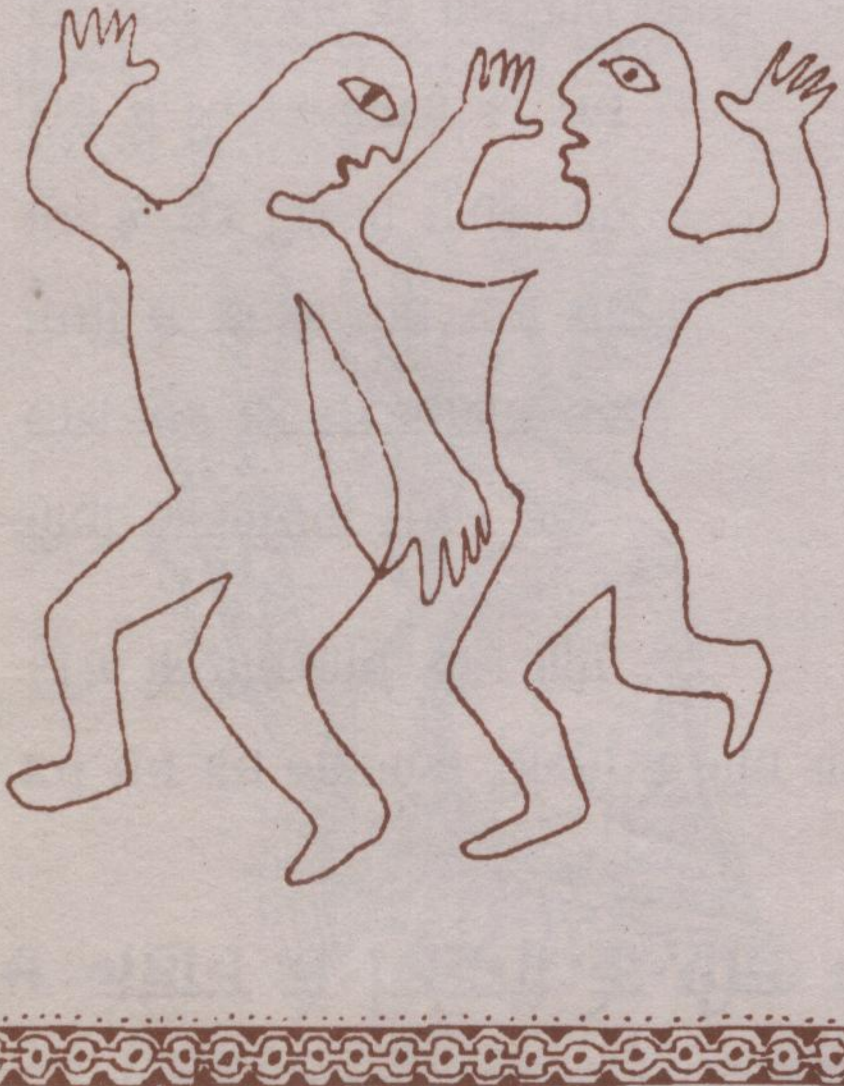
एक है हमारी आज आशा
और एक है हमारा अरमान
कोई देश हो या कोई भाषा
पर समझते हैं दिलों की हम ज़ुबान

हम फर्क ऊंच-नीच का न जानें
न भेद जात-पात का ही मानें
गा रहे हैं नौजवां बनाओ इक नया जहां
कि जिसमें हो न ज़ुल्म का निशान

गाते गीत अमन के बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो
अपनी आन के लिये लड़े चलो, लड़े चलो, लड़े चलो

हम हैं जवान हम चलें तो
साथ चलते हैं ज़मीनो-आसमान
एक हैं हमारी आज राहें . .

● इप्टा



इस जहान में ज़िंदगी के गीत गाएं

हम सब इस जहान में ज़िंदगी के गीत गाएं
मुक्ति के गीत गाएं, गीत गाएं

गीतों से आंधियां मचल उठें
लाल फूल हर तरफ खिल उठे
नग्मों से डर के मौत भाग जाए
सुन के सुर ज़िंदगी सुराग पाए
रात में चिराग आशा का जले
इस जहां में हम वो गीत गाए जाएं

भंग निराशा का करे जो अंधकार
मौत के जो तोड़ दे कारागार
कारवां-ए-आज़ादी में आ मिले
शोषितों के प्राण मिल के संग चले
एकता और मित्रता के गीत ये
इस जहां में हम सदा ही गाए जाएं



साथियो सलाम है सलाम है सलाम

साथियो सलाम है सलाम है सलाम
इस देश की आज़ादियां, हैं तुम्हें बुला रहीं
जातिवादी बेड़ियां, झनझना के गा रहीं
कुबूल हो आज़ादियां, तोड़ दो ये बेड़ियां
प्रण करो यहां अभी, प्रण करो यहां सभी
तुम्हारे ही हाथ में, देश की लगाम है।
साथियो सलाम है . . .

घुन समाज में मची दूर तुम उसे करो
बुझ रहा जला दिया, खून से इसे भरो
ये देश लहलहा उठे, भारतीय गा उठे
विश्व में आवाज़ है, विश्व में पुकार है
तुम्हारे ही हाथ में, देश की लगाम है।
साथियो सलाम है . . .



शहीदों की चिताओं पर

आ...आ...आ...ओ...ओ...ओ
शहीदों की चिताओं पर खड़ी हुई स्वतंत्रता
आज लड़खड़ा रही है क्या हुआ किसे पता - 2
मेरे वतन...मेरे वतन
आ...आ...आ...ओ...ओ...ओ
शहीदों . . .

कुर्बानियों के बाद ये स्वतंत्रता मिली है
लबों पे मुस्करहाटें अभी-अभी खिलीं हैं - 2
धुंआ किधंर से उठ रहा, ये लूट आग कैसी
ये गोलियों की बरखा, ये भूख प्यास कैसी
मेरे वतन...मेरे वतन
आ...आ...आ...ओ...ओ...ओ
शहीदों . . .

देश के जवान आज किस तरफ चले हैं
क्या भूल ये चुके हैं किस गोद में पले हैं - 2
माता पुकारती है मेरे लाल लौट आओ
ये देश जल रहा है उठकर इसे बचाओ
मेरे वतन...मेरे वतन
आ...आ...आ...ओ...ओ...ओ
शहीदों . . .

होंगे कामयाब. . .

होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन
हो-हो. . . मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन।

हम चलेंगे साथ-साथ, डाले हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन
हो-हो. . . मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।

नहीं डर किसी का आज, नहीं डर किसी का आज
नहीं डर किसी का आज के दिन
हो-हो. . . मन में है विश्वास पूरा है विश्वास
नहीं डर किसी का आज के दिन।

● मार्टिन लूथर किंग



पर्वतों को फोड़कर

पर्वतों को फोड़कर, पत्थरों को तोड़कर,
बनायीं परियोजनाएं ईंट-लहू से जोड़कर,
श्रम किसका है? धन किसका है?

जंगल को काटकर, धरती को जोतकर,
फसलें उगाई स्वेद लहरों से सींचकर,
भात किसका है?
माड़ किसका है?

हमने ही ताना और बाना लगाकर,
कपड़े बुने नस-नस को धागा बनाकर,
गर्मी किसकी?
ठिठुरन किसकी?

कल मशीन घुमाई, पैदावार बढ़ाई,
ताकत की बिजली से फैक्टरियां चलाईं
कोठी किसकी?
झुग्गी किसकी?

कारण समझ लिए, हथियार उठा लिए
क्रांति हम चलाएंगे युद्ध बिना बंद किए
मौत तुम्हारी।
जीत हमारी।

● चेराबण्डाराजु

आज़ादी कैसी ? किसकी?

कौन आज़ाद हुआ
किसके माथे से सियाही छूटी
मेरे सीने में अभी दर्द है महकूमी का
मादरे हिन्द के चेहरे पे उदासी है वही
कौन आज़ाद हुआ . . .

खंजर आज़ाद है सीने में उतरने के लिए
मौत आज़ाद है लाशों पे गुज़रने के लिए
कौन आज़ाद हुआ . . .

काले बाज़ार में बदशक्ल चुड़ैलों की तरह
कीमतें काली दुकानों पे खड़ी रहती हैं
हर खरीददार की जेबों को कतरने के लिए
कौन आज़ाद हुआ . . .

कारखानों में लगा रहता है
सांस लेती हुई लाशों का हुजूम
बीच में उनके फिरा करती बेकारी भी
अपने खूंखार दहन खोले हुए
कौन आज़ाद हुआ . . .



रोटियां चकलों की कहबाएं हैं
जिनको सरमाए के दल्लालों ने
नफाखोरी के झरोखों में सजा रक्खा है
बालियां धान की गेहूं के सुनहरे खोशे
मिस्र ओ यूनान के मजबूर गुलामों की तरह
अजनबी देश के बाज़ारों में बिक जाते हैं
और बदबख्त किसानों की तड़पती हुई रूह
अपने अफलास में मुंह ढांप के सो जाती है
कौन आज़ाद हुआ . . .

● **अलि सरदार जाफरी**

सौ में सत्तर आदमी. . .

सौ में सत्तर आदमी
फिलहाल जब नाशाद हैं
दिल पे रखकर हाथ कहिये
देश क्या आज़ाद है

कोठियों से मुल्क की,
मयार को मत आंकिये
असली हिन्दुस्तान तो
फुटपाथ पर आबाद है। सौ में सत्तर. . .

सत्ताधारी लड़ पड़े हैं
आज कुत्तों की तरह
सूखी रोटी देखकर
हम मुफलिसों के हाथ में। सौ में सत्तर. . .

जो मिटा पाया न अब तक
भूख के अवसाद को
दफन कर दो आज उस
मफलूस पूंजीवाद को। सौ में सत्तर. . .

बूढ़ा बरगद साक्षी है
गांव की चौपाल पर
रमसुदी की झोंपड़ी भी
ढह गई चौपाल में। सौ में सत्तर. . .



जिस शहर के मुन्तज़िम
अन्धे हों जलवागाह के
उस शहर में रोशनी की
बात बेबुनियाद है। सौ में सत्तर. . .

जो उलझ कर रह गई है
फाईलों के जाल में
रोशनी वो गांव तक,
पहुंचेगी कितने साल में। सौ में सत्तर. . .

● **अदम गोंदरी**

क्यों? क्यों? क्यों?

क्यों आसमान में
चकमक करते तारे
और इन्द्रधनुष में
रंग बिरंगे प्यारे
क्यों गुड़हल होता
सुर्ख एकदम लाल
क्यों झिलमिल करता
मकड़ी का जाल
क्यों? क्यों? क्यों?

आम, नीम और इमली
क्यों एक जगह हैं ठहरे
क्यों समुद्र में ऊंची
गिरती पड़ती हैं लहरें
कौए, तोते फर-फर क्यों
आसमान में उड़ते
क्यों बिल्ली के तन पर दो-दो
पंख नहीं उग आते
क्यों? क्यों? क्यों?

क्यों जुगनू की पीठ पर
जलती हुई मशाल है
क्यों गैंडे हाथी की
पीठ उसकी ढाल है
क्यों पहाड़ की चोटी
सूनी और वीरान है
क्यों हंसती आंखों में
आंसू का सैलाब है
क्यों? क्यों? क्यों?

क्यों नहीं इन पैसों से
लोगों को राहत मिलती
जिससे सारी दुनिया की
भूखी तस्वीर बदलती
अपनी ज़ुबान का ताला
अब वक्त आ गया खोलो
अपने सारे प्रश्नों को
बेधड़क खड़े हो बोलो
क्यों? क्यों? क्यों?



नफ़स-नफ़स कदम-कदम

नफ़स-नफ़स, कदम-कदम
बस एक फिक्र दम-ब-दम
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंकलाब चाहिए!
इंकलाब ज़िन्दाबाद!
ज़िन्दाबाद–इंकलाब!

जहां अवाम के खिलाफ साजिशें हों शान से
जहां पे बेगुनाह हाथ धो रहे हों जान से
जहां पे लफ्ज़े-अमन एक खौफनाक राज़ हो
जहां कबूतरों का सरपरस्त एक बाज हो
वहां न चुप रहेंगे हम
कहेंगे, हां, कहेंगे हम
हमारा हक! हमारा हक! हमें जनाब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंकलाब चाहिए!
इंकलाब–ज़िन्दाबाद!
ज़िन्दाबाद-इंकलाब!

यकीन आंख मूंद कर किया था जिन पर जान कर
वही हमारी राह में खड़े हैं सीना तान कर
उन्हीं की सरहदों में कैद हैं हमारी बोलियां
वही हमारे थाल में परस रहे हैं गोलियां
जो इनका भेद खोल दे
हरेक बात बोल दे
हमारे हाथ में वही खुली किताब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंकलाब चाहिए!
इंकलाब-ज़िन्दबाद!
ज़िन्दाबाद-इंकलाब!

वतन के नाम पर खुशी से जो हुए हैं बे-वतन
उन्हीं की आह बे-असर, उन्हीं की लाश बे-कफन
लहू पसीना बेचकर जो पेट तक न भर सके
करें तो क्या करें भले न जी सकें, न मर सकें
सियाह ज़िंदगी के नाम
उनकी हर सुबह व शाम
उनके आसमां को सुर्ख आफताब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंकलाब चाहिए!
इंकलाब-ज़िन्दाबाद!
ज़िन्दाबाद–इंकलाब!

होशियार! कह रहा लहू के रंग का निशान
ऐ किसान होशियार! होशियार नौजवान
होशियार! दुश्मनों की दाल अब गले नहीं
सफेदपोश रहजनों की चाल अब चले नहीं
जो इनका सर मरोड़ दे
गरूर इनका तोड़ दे
वह सरफरोश आरजू वही शबाब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंकलाब चाहिए!
इंकलाब-ज़िन्दाबाद!
ज़िन्दाबाद-इंकलाब!

तसल्लियों के इतने साल बाद अपने हाल पर
निगाह डाल, सोच और सोच कर सवाल कर
किधर गये वो वायदे? सुखों के ख्वाब क्या हुए?
तुझे था जिनका इन्तज़ार वो जवाब क्या हुए?
तू इनकी झूठी बात पर
न और एतबार कर
कि तुझको सांस-सांस का सही हिसाब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जबाव दर सवाल है कि इंकलाब चाहिए!
इंकलाब-ज़िन्दाबाद!
ज़िन्दाबाद–इंकलाब

● शलभ श्रीराम सिंह

ये कैसा राज है भाई

इक कथा सुनो रे लोगों - 2
अरे हम मजदूर की करुण कहानी - 2
और करीब से जानो
इक कथा सुनो रे लोगों - 2
भाईयों. . .बहिनों...बहिनों...

अपनी मेहनत से भाई, धरती की हुई खुदाई - 2
माटी में बीज को बोया - 2
धरती को दुल्हन बनाई - 2
पसीना हमने ही बहाया, भूपति ने खूब कमाया - 2
अरे साहूकार के सूद ने हमको, साहूकार के कर्ज़ ने हमको
गांव से शहर भगाया
अरे दाने दाने को मजदूर तरसे - 2
जीने की कठिनाई
ऐसा क्यों है भाई, क्योंकि -
ये सामन्ती राज है
खाने को दाना नहीं
पीने को पानी नहीं
रहने को घर नहीं
ओढ़ने को कपड़ा नहीं
ये कैसा राज है भाई, ये झूठा राज है भाई - 2
भाईयों. . .बहिनों...बहिनों...

अपनी मेहनत से भाई, धरती की हुई खुदाई - 2
माटी का बनाया गारा - 2
गारे से ईंट बनाई
ईंटों से महल बनाने, पसीना बहाया हमने - 2
धनवान को मिली सुविधा - 2
सुख चैन भुलाया हमने - 2
अरे अपना ही रहने का बांदा - 2
नहीं बना है भाई
ऐसा क्यों है भाई, क्योंकि -
ये धनिकों का राज है
खाने को दाना नहीं
पीने को पानी नहीं
रहने को घर नहीं
पहनने को कपड़ा नहीं
ये कैसा राज है भाई, ये झूठा राज है भाई - 2
भाईयों. . .बहिनों...बहिनों...

अपनी मेहनत से भाई, काटन का सूत बनाया - 2
उसको चढ़ाया व्हील पर - 2
कपड़ा हमने ही बनाया - 2
कपड़े को रंग बिरंगी झालर भी चढ़ाई हमने - 2
टी. बी. को भी अपनाया - 2
और माल कमाया धनी ने - 2
अरे हम अधनंगे मुर्दाघाट पे - 2
कफन की भी मंहगाई
ऐसा क्यों है भाई, क्योंकि -

ये मालिकों का राज है
खाने को दाना नहीं
पीने को पानी नहीं
रहने को घर नहीं
ओढ़ने को कपड़ा नहीं
ये कैसा राज है भाई, ये झूठा राज है भाई - 2
भाईयों. . .बहिनों...बहिनों...

अब खबर सुनो इक ताजी, सरकार की सौदेबाजी - 2
धनवान को खुश रखने को - 2
हमसे ही की दगाबाजी - 2
एक कानून पास करवाया - 2
हमें गुनहगार ठहराया - 2
झोंपड़े को पुलिस के हाथों - 2
बेरहमी से तुड़वाया - 2
अरे तीन साल की सजा भी हो गई - 2
और मिली पिटाई
ऐसा क्यों है भाई, क्योंकि -
ये पुलिस का राज है
खाने को दाना नहीं
पीने को पानी नहीं
रहने को घर नहीं
ओढ़ने को कपड़ा नहीं
ये कैसा राज है भाई, ये झूठा राज है भाई - 2
भाईयों. . .बहिनों...बहिनों...



अब जात धर्म को छोड़ो, मजदूर का रिश्ता जोडो - 2
ऐसी संगठना के बल पर - 2
झूठे संसद को तोड़ो - 2
जब अपना शासन होगा, सबके घर राशन होगा - 2
दुनिया मजदूर के बल पर - 2
मजदूर का शासन होगा - 2
अरे नारा लगाओ इंकलाब का - 2
तब ही मिटेगी बुराई
ये सब कब होगा भाई
जब मजदूर का राज होगा
खाने को दाना होगा
पीने को पानी होगा
रहने को घर होगा
ओढ़ने को कपड़ा होगा
ऐसे राज को लाना भाई - 2
भाईयों. . .बहिनों...बहिनों...
ऐसे राज को लाना भाई

("हमारा शहर" फिल्म से)



एकलव्य का प्रकाशन